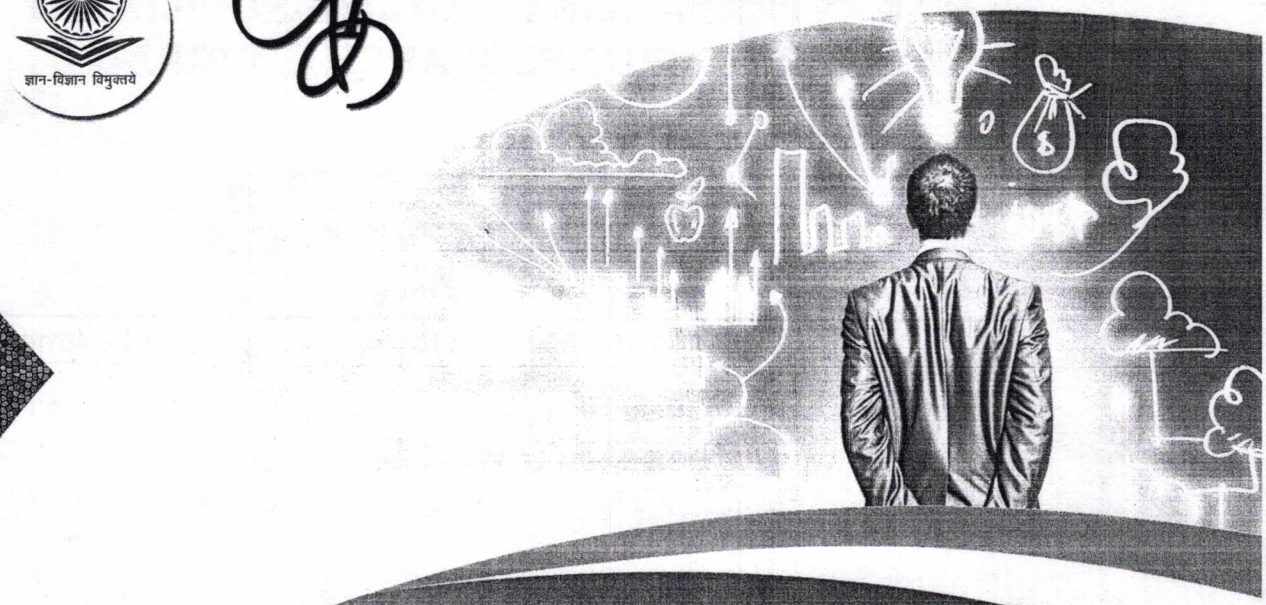

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume-VIII, Issue-II
April - June - 2019
Marathi / Hindi

IMPACT FACTOR / INDEXING 2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII Issue - II Marathi / Hindi April - June - 2019

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

15

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

VOLUME - VIII, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	भारतीय ग्रामीण युवाओं में कौशल विकास और रोजगार आवश्यकता एक प्रयास : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन **राजा बाबू गुप्ता**	१-४
२	संगीत शिक्षण में कंठ साधना का महत्व **Jagtar Singh Panesar**	५-९
३	आंबेडकरी आंदोलन : गीत गायन कला **प्रो. डॉ. एम. डी. इंगोले**	१०-१२
४	नागार्जुन के काव्य की अन्तर्वस्तु **प्रा. खराडे आर. एम.**	१३-१९
५	संगीत शिक्षण में स्वर ज्ञान तथा आश्रय रागों का महत्व **Komalpreet Kaur**	२०-२३
६	माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत दृष्टिबाधित एवं सामान्य विद्यार्थियों के संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक विश्लेषण **डॉ. कमलेश यादव**	२७-२८
७	टेलीविजन कार्यक्रमों में प्रयुक्त पार्श्व संगीत का बुरा प्रभाव : बच्चों के विशेष संदर्भ में **निशा रानी**	२९-३३
८	प्राचीन भैषज्य के विकास में बौद्ध चिकित्सकों का योगदान **लेखराम सेलोकर**	३४-३७
९	संस्कृतहस्तलिखितेषु प्रभुवंशकाव्यहस्तलिखितस्य अध्ययनम **सौ. सरिता राजेन्द्र गिल्लुरकर**	३८-४१
१०	कैशिकी वृत्तिः **डॉ. राजेन्द्र चिं. जैन**	४२-४६
११	विश्वशांति और आनंदी जीवन के लिए : म. बुद्ध विचार **प्रा. डॉ. एम. बी. बिराजदार**	४७-५१

३. आंबेडकरी आंदोलन : गीत गायन कला

प्रो. डॉ. एम. डी. इंगोले
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, गंगाखेड, जि. परभणी.

मराठवाडा ही नहीं अपितु संपूर्ण महाराष्ट्र में गीत–गायन कला की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही हैं। संगीत और गीत मनुष्य का अत्यंत प्रिय होता है। यह कला मनुष्य के मन पर गहरा प्रभाव डालती है।इस कला का प्रयोग मनुष्य का दिल बहलाने,मनोरंजन तथा समाज प्रबोधन या वैचारिक जागृति के लिए किया जाता रहा हैं। विशेषतः यह कला समकालीन समय में आंबेडकरी विचार धारा के प्रचार–प्रसार के लिए अत्यंत उपयुक्त एवं महत्वपूर्ण मानी गयी हैं। डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर भी इस कला को समाज प्रबोधन के लिए अत्यंत सक्षम कला मानते थे। वे संगीत प्रेमी,वायलन वादक और कबीर के पदों कायल थे। महाराष्ट्र के सुप्रसिध्द गीत–संगीतकार,गायक विष्णु शिंदे जी बताते हैं;

"सन उन्नीसौ बत्तीस–पैंतीस के बीच का समय होगा। मुंबई के जांभोरी (पूर्व समय का वरली मैदान) में डॉ.बाबासाहब आंबेडकर की सभा थी। वे निर्धारित समय से दो घण्टे बाद वहाँ पहुँचे। उनको लगा कि सभा के लिए आए हुए सब लोग वहाँसे अपने–अपने घर जा चुके होंगे किन्तु उनका यह कयास गलत साबित हुआ। वहाँ पहुँचने पर बाबासाहब देखते हैं कि, वहाँ तो लोगों की काफी भीड हैं। मंच पर भीमराव कर्डक गीत–गायन कर रहे हैं। उस समय बाबासाहब ने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा; 'कर्डक,मेरे दस भाषण और तुम्हारा एक गीत बराबर हैं।"[1]

अर्थात् उनका यह मानना था कि,समाज प्रबोधन की प्रभाव करिता गीत–गायन कला में प्रचंड होती है।

डॉ.बाबासाहब आंबेडकर की महाराष्ट्र में जहाँ–जहाँ सभाएँ होती थी, वहाँ वहाँ गायक–कलाकार लोग अपनी गायन मंडली के साथ स्वयं स्फूर्ति से पहुँचते थे। डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के भाषण से पूर्व अपनी गीत–गायन कला के द्वारा लोगों का मनोरंजन एवं प्रबोधन करते थे। उन गायक कलाकारों में विशेषकर गोविंद म्हसीलकर और उनके गुरू शाहीर श्रीधर ओहळ,नागोराव पाटनकर कव्वाल, दिनबंधु,रामचंद्र सोनवणे,भाऊ फक्कड,केरूजी घेगडे,केरूबुआ गायकवाड,केशव सुखा अहेर,गोपाळ बाबा बलंकर,किसन बनसोड ये विदर्भ में डॉ.बाबासाहब आंबेडकर की सभाओं में उपस्थित हुआ करते थे। अमृत बाबा बावसकर, पानीपत दास,विठ्ठलनाथ कांबळे,भीमराव कर्डक,लक्ष्मण केदार आदि भी महत्वपूर्ण गायक कलाकार थे। इन्होंने बकायदा अपने–अपने गांवों में 'जलसा मंडल', 'गायन मंडल' अलग–अलग नामों से स्थापित किये थे। यही नहीं परवर्ती काल में महाराष्ट्र में गांव–गांव में गायन मंडलों की स्थापना हुई।

डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के आंदोलन की दिशा एवं कार्यकलापों का ब्यौरा तथा संदेश गायक कलाकार लोग अपने गीतों के माध्यम से लोगों तक पहुँचाते थे। साथ ही साथ डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक,आर्थिक विचारों का प्रचार–प्रसार अपनी गीत–गायन कला के माध्यम से करते थे। समाज की गुलामी, अशिक्षा, अज्ञान, अंधविश्वास,अर्थाभाव रहन–सहन, खान–पान,वेशभूषा,बहुदेव और दैववाद आदि के कारणों की मिमांसाकर लोगों को जागृत करने का प्रयास करते थे। डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के महाड सत्याग्रह,कालाराम मंदिर सत्याग्रह,पुणे करार,धर्मांतर आंदोलन आदि के प्रचार–प्रसार एवं मानवीय अधिकार प्राप्ति के जनआंदोलनों के प्रति लोगों का अनुकूल मानस बनाने तथा समाज संगठन में भी गायक–कलाकारों की भी बडी महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं।

डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के पश्चात भी यह कला आंबेडकरी आंदोलन को निर्वाहित एवं विकसित करती हुई दृष्टिगोचर होती हैं। प्रस्तुत लघुशोध परियोजना के मराठवाडा के विभिन्न जिलों के आंबेडकरी कवि–गायकों के साक्षात्कार लेने का अवसर मिला। इस दौरान उस्मानाबाद जिले के आंबेडकरी कवि–गायक,कलाकार,शाहीर गौतम मलालेजी ने गीत–संगीत–गायन कला संबंधी कहा कि;

"सन उन्नीसौ नब्बे के आस–पास आंबेडकरी आंदोलन में दलित पैंथर आंदोलन का पडाव था। अब आंदोलन कुछ लोगों के उपजीविका का साधन मात्र बनकर रह गया हैं। आंबेडकरी गायकी का कुछ हद तक अब व्यावसायीकरण हो गया है। अरसा पहले दांगटा शाहीरी थी। शाहीरी प्राचीन बौध्द कला है। उसमें दीमडी होथी थी। इकतारा,ढोलक,तबला होता था। हार्मोनियम होती थी। हार्मोनियम की जगह अब बैंजो,ॲक्टोपैड, कीबोर्ड आए हैं। पुराने तंतुवाद्य से तुनतुना बना, इकतारा बना,बीना बना,बुलबुल तारा बना,ऐसे अनेक तंतुवाद्य यंत्र बने और प्रचलन में आएं। बाद में डफ बना। सवर्णों इसका शास्त्र निर्माण किया। इसे शास्त्र में ढाला,मीडिया में लाया। पिछडोंने वग नाटय लिखा। लोकनाट्य,संगीत नाटक लिखे,ये पिछडों की कलाएँ हैं। पिछडों की कला भाषा को लेकर ब्राम्हणवादियों ने बहुजनों का स्थान लिया। उसे अर्थ प्राप्ति के लिए प्रयुक्त किया। अब ये लोग भीम गितों में उतरे हैं।"[2]

गीत–संगीत और गायन कला संबंधी प्रो.कालीचरन स्नेही लिखते हैं;

"यद्यपि संगीत एक विद्या है, पर ग्रामिण क्षेत्रों में दलित जातियों के लिए इस विद्या के कोई मायने नहीं हैं। सवर्ण जाति के लोग दलित जाति के संगीतकारों को अपवाद स्वरूप छोडकर, इन्हें राष्ट्रीय मंचों पर अमंत्रित ही नहीं किया जाता है। हॉ, यह बात सही हैं कि अन्य दलितों की अपेक्षा ऐसे दलित संगीतज्ञों के कुछ अतिरिक्त आदर सम्मान तो मिल ही जाता है।"[3]

अर्थात् दलित संगीतकार,गायक कलाकारों के प्रति सवर्णों का जातिगत भेदभावपूर्ण व्यवहार दृष्टिगोचर होता हैं। पिछडों की इस कला को सवर्णों ने अर्थार्जन का साधन बनाया किन्तु जिन लोगों की यह मूलतः कला हैं, उन्हें हिकारत,छल–छदम् के सिवा क्या मिला हैं। इस बात के साहित्य में भी

कई प्रमाण मिलते हैं। अपने पिताजी की स्मृति में लिखे आलेख 'तुम्हारे बगैर हमारे वजूद की कल्पना ही नहीं की जा सकती' में प्रो.कालीचरण स्नेही निम्न कला संबंधी लिखते हैं;

"वे मुझसे कहा करते थे कि, 'ढोलक बजाकर मुझे क्या मिला? मेरी आर्थिक और सामाजिक स्थिति तो वैसी ही बनी रही, क्यों कि हमारी जाति को हेय समझा जाता था। इसलिए उन्होंने हम चार भाईयों को संगीत कला से बिल्कुल ही अलग रखा। वे कहते थें कि, 'संगीत का शौक, नशे की तरह होता है,यदि तुम इसमें एक बार रंग गए तो फिर तुम्हारे ऊपर और रंग नहीं चढने का।"[4]

अतः यह सच बात है कि तत्कालीन समय में गायकी कला और,आंबेडकरी आंदोलन का नशा लोगों में जूनूनी था जिस के परिणाम स्वरूप उनका अपने तथा परिवार के दायित्व के प्रति बडा ही दुर्लक्ष होता हुआ प्रतीत होता हैं। भले ही उनको कई मुसिबतों को क्यों न झेलना पडे ।

प्राचीन काल में गीत–गायन कला यह बौध्द नाग वंशीय लोगों की है,इसके प्रमाण इतिहांस में मिलते हैं। आर.डी.गायकवाड अपने ग्रंथ 'आंबेडकरी चळवळीच्या आठवणी' में लिखते हैं;

"प्राचीन काल में 'नाग' लोग बुध्द धम्म के कट्टर अनुयायी थे। इन नाग लोगों ने ही बौध्द धर्म का अन्य स्थानों पर प्रचार–एवं–प्रसार करने की बात इतिहास में दिखाई देती हैं। साथ ही साथ 'नाग' इस शब्द का अर्थ 'हाथी' ऐसा भी होता हैं। 'हाथी' यह बुध्दीवान प्राणी होता है। नाग लौग भी बुध्दीवान,कला में निपूण और शौर्यवान थे।"[5]

पिछडों की इस कला के प्रमाण इतिहास में ही नहीं अपितु जनमानस में प्रचलित लोक धारणाओं से या लोगों में प्रचलित मुहावरों, कहावतों से भी मिलता हैं। जैसे कि;

'बम्मन के घर में सजना सँवरना,मराठों के घर में अनाज और मातंग–महारों के घर में गाना बजाना।'[6]

अर्थात् गाना–बजाना यह पिछडों की कला हैं। इसे आंबेडकरी आंदोलन के प्रचार–प्रसार के लिए प्रयुक्त किया गया। डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के समकालीन समय में ही नहीं बल्कि उनके पश्चात् भी उनका आंदोलन गायक कलाकारों ने कई विपदाओं का सामना करते हुए चलाया,आगे बढाया हैं। तत्कालीन समय में यातायात की कोई साधन–सुविधा नहीं थी फिर भी लोग भूखे–प्यासे अपनी गायकी के वाद्य यंत्र–हार्मोनियम,तबला,ढोलक,झांझ,कडी सिर पर ढोते हुए गांव–गांव जाकर आंबेडकरी विचारधारा का प्रचार–प्रसार, गीत–गायन कला के द्वारा करते थे।

१. आंबेडकर कवि–गायक–शाहीर विष्णु शिंदे : साक्षात्कार
२. आंबेडकरी शाहीर : गौतम मलाल से साक्षात्कार
३. आंबेडकर कल्वर (मई–अक्तु.–2017) संपा.प्रो.कालिचरण स्नेही: (पृ.14–15)
४. 4. वही (पृ.14)
५. आंबेडकरी चळवळीच्या आठवणी–आर.डी.गायकवाड (पृ.21)
६. वही (पृ.23)